

टमाटर

बुवाई का समय एवं उन्नत किस्मे:

मैदानी क्षेत्र में : उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में टमाटर की फसल दो बार लगाई जाती है।

पहली फसल की पौधशाला में बुवाई का समय: नवम्बर-दिसम्बर, रोपाई का समय : दिसम्बर -जनवरी

दूसरी फसल की पौधशाला में बुवाई का समय: फरवरी-मार्च, रोपाई का समय : मार्च-अप्रैल

उन्नत किस्मे: पूसा सदाबहार, पूसा रोहिणी, पूसा-420, पूसा गौरव, पूसा- शीतल, पूसा उपहार

संकर किस्में: पूसा. हाइब्रिड-2, पूसा हाइब्रिड-4, पूसा हाइब्रिड-8

पहाड़ी क्षेत्र में : पौधशाला में बुवाई का समय: मार्च-मई, रोपाई का समय : अप्रैल-जून

उन्नत किस्मे: पूसा सदाबहार, पूसा- शीतल

फसल अन्तरण: टमाटर की फसल में पौधे से पौधे की दूरी 30-45 से.मी. तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45-60 से.मी. रखनी चाहिए। पौध रोपाई का कार्य शाम के समय में करना चाहिए।

बीज दर: एक हेक्टेयर क्षेत्र में फसल उगाने के लिए नर्सरी तैयार करने हेतु संकर किस्मों के लिए 200-250 ग्राम बीज तथा अन्य किस्मों के लिए 350-400 ग्राम बीज पर्याप्त होते हैं।

पौधशाला तैयार करना

पौधशाला में बुवाई से पूर्व बीजों का उपचार फफूंदनाशक दवा (कैप्टान या थीरम) 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। पौधशाला उठी हुई क्यारियों में तैयार करना चाहिए। इन क्यारियों की लंबाई कम से कम 3 मीटर व चौड़ाई 0.6 मीटर रखनी चाहिए | बीजों की बुवाई पंक्तियों में करें तथा बुवाई की गहराई 1.5 से 2.0 सेमी. रखें | बीजों को बोने के बाद गोबर की खाद व मिट्टी के मिश्रण से ढक कर हल्की सिंचाई करनी चाहिये। यदि सम्भव हो तो क्यारियों को पुआल या सूखी घास से जमाव आने तक ढक कर रखना चाहिए, जिससे कि क्यारियों में नमी बनी रहती है तथा बीजों का एक समान जमाव होता है। 35 से 40 दिनों में पौध रोपाई योग्य हो जाती है।